डॉ. जॉर्ज उल्लू



लेखनः सैसील जॉसलीन

चित्रः लीसल वायल

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

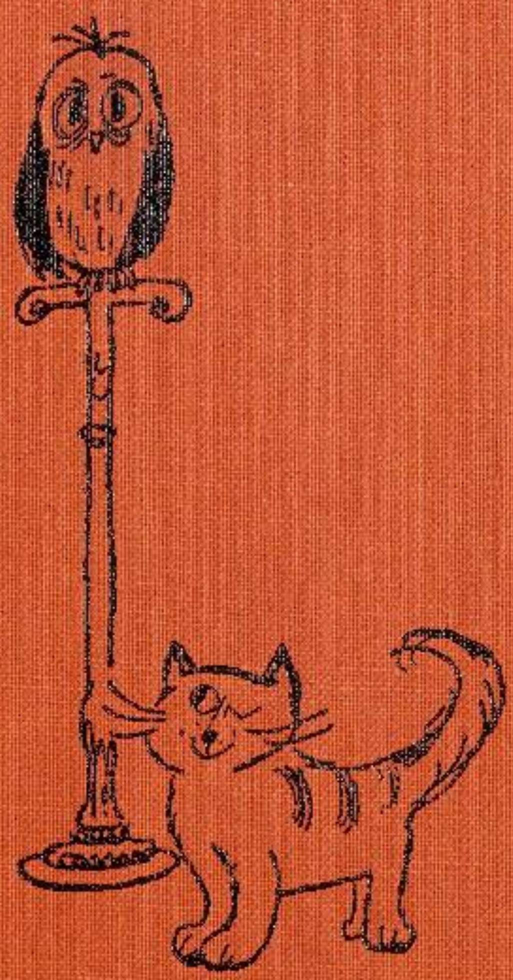
यह तो सब जानते थे कि दोत्तोरे जॉर्जो गूफो (डॉ. जॉर्ज उल्लू) एक बेहद खास उल्लू था।

वह तेंदू फल के रंग के पलाज़्ज़ो (महल/हवेली) में प्रोफेसोरे का बेहद खूबसूरत साथी था। सो जब रोम की गलियों में दोत्तोरे की खबर फैली तो लोग आँसू बहाते "टेरिबैलास्सीमो" (भयंकर) चीखने लगे।

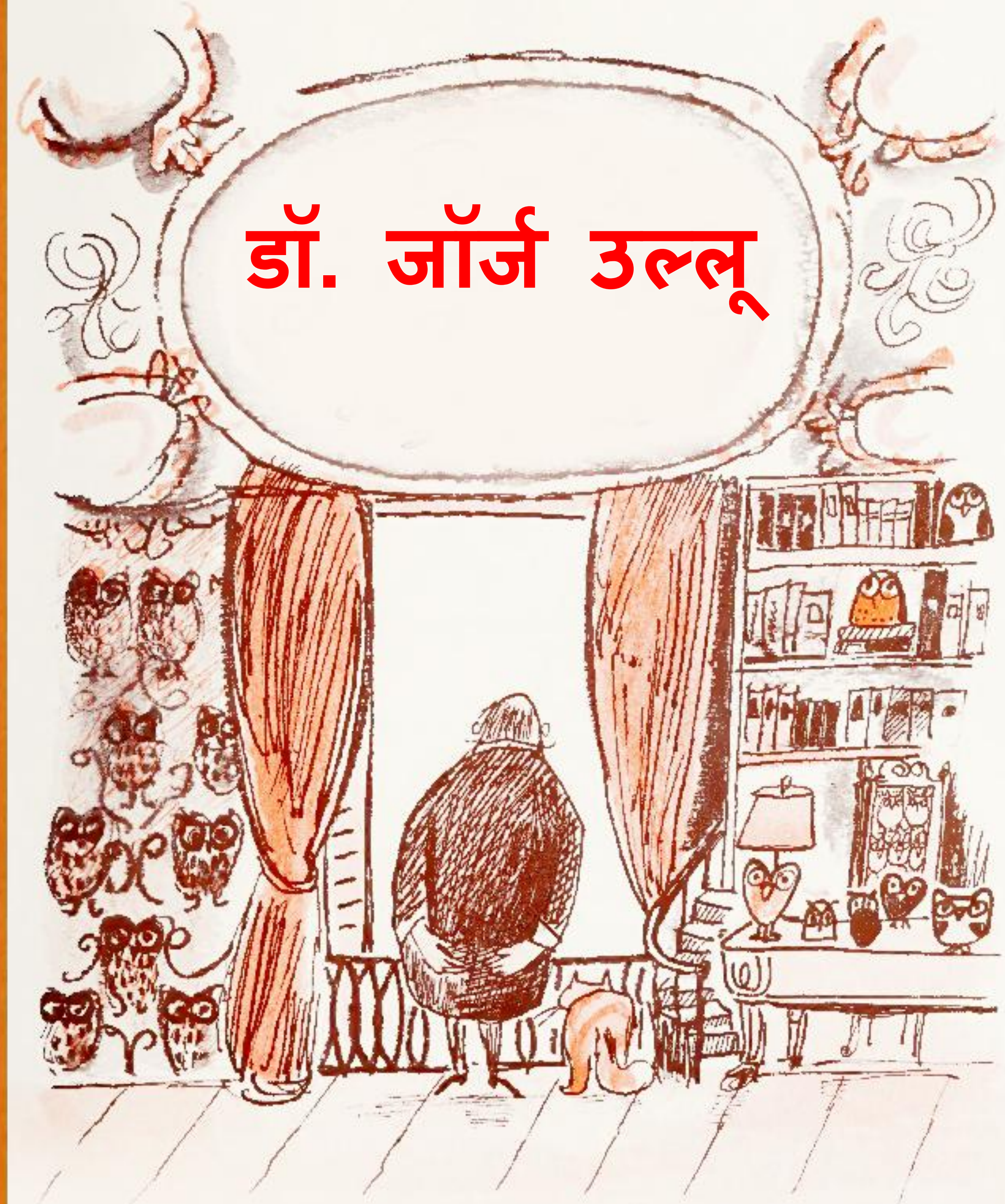
हुआ दरअसल यह कि वह नन्हा उल्लू गर्मी के उस दिन एक खिड़की के पास बैठ हवा का मज़ा ले रहा था। वह यह भूल कि वह कहाँ बैठा है और अचानक पीछे फुदका और खिड़की से बाहर गिर गया। उसे दूर की चीज़ें साफ़ नज़र नहीं आती थीं और वह घबरा भी गया था, सो वह उड़ गया। वह अपने पीछे व्याकुल प्रोफेसोरे और अस्त-व्यस्त गृहस्थी को छोड़ गया। अब वह प्रोफेसोरे के नाश्ते का रोल (डबल रोटी) खाने, कर्लो को देख प्यार से सिर हिलाने या बिल्ले टिबॉल्ट को डपटने के वास्ते वहाँ था ही नहीं।

शहर भर में उसे खोजने की तमाम कोशिशें नाकाम रहीं। स्कूल के बच्चों, शहर के मेयर, रक्षा मंत्री और प्रोफेसोरे के विश्वविद्यालय के विद्वान सहकर्मियों की कोशिशों का कोई फायदा नहीं हुआ। जब टिबॉल्ट तक को उसको चिढ़ाने-डपटने की कमी खलने लगी, उसने अपनी ही खोज आयोजित की। तब जाकर कछ उम्मीद बनी। जहाँ सब नाकाम रहे थे, टिबॉल्ट कामयाब रहा। इस मज़ेदार कहानी का आकर्षक अन्त है।

अपनी इस पुस्तक में सैसील जॉसलीन ने रोम के सौंदर्य को बखूबी पकड़ा है, और तीन खास दोस्तों की कहानी को सुन्दरता से बखाना है। लीसल वायल के चित्र रोम के लोगों, उनके पालतू जानवरों, वहाँ के चैकों और हवेलियों को खूबसूरती से दर्शा, कहानी के स्वाद को बढ़ाते हैं।



डॉ. जॉर्ज उल्लू



लेखनः सैसील जॉसलीन

चित्रः लीसल वायल

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा



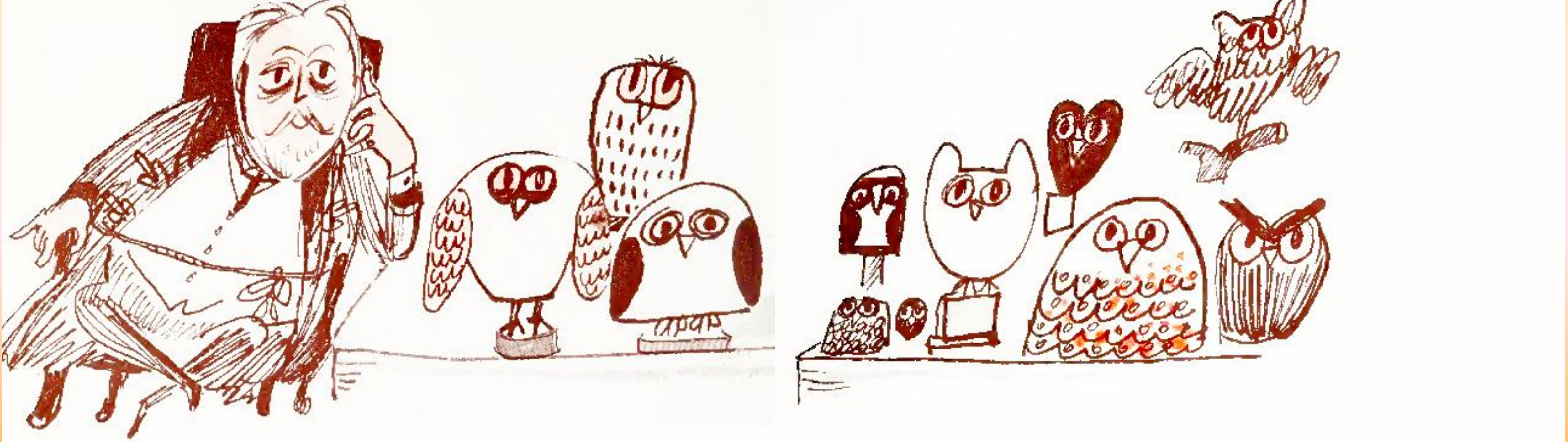


एल के लिए मेरे प्यार के साथ

पियाज़्ज़ा (चैक) नवोना में घुटनों तक डूबे पानी समुद्र के देवता ट्राइटन की तुरही की आवाज़ जितनी दूर तक पहुँचे, उतनी दूरी पर सिंदूरी रंग की एक पलाज़्ज़ो (महल/हवेली) है।

इस प्राचीन इमारत में ऊपर वाले अपार्टमेंट में, जिसके कमरों की छत अन्दर से सुनहरी और जिसकी ऊपर में हरा-भरा बाग लगा है, प्रोफेसोरे रहते थे।

वे कद में छोटे ओर गोल-मटोल थे, ओर उनका स्वभाव मिलनसार था। उनकी कोयले-सी काली मूंछें ऊपर उठ उनकी गलमुच्छों से मानो मिल जाती थीं। किताबों और विचारों को पसन्द करने वाले प्रोफेसोरे अपनी सुबहें उल्लुओं की कतारों से सजे अध्ययन कक्ष में बिताते थे। वे बुद्धिमान चेहरों वाले इन पक्षियों के प्रशंसक थे और उनके पास उल्लुओं का एक उम्दा संग्रह था।



प्रोफेसोरे की गहरे संतोष की भावना को साझा करने उनके साथ रहते थे:

कार्लो, जो उनका मेजर डोमो (प्रबंधक) था। वह शानदार और आडम्बर भरी भाषा में बातचीत करता था, उनकी कापुचीनो (दूध वाली कॉफी को खूबसूरती से परोसता था, और दरवाज़ों को नाटकीयता के साथ खोलता था।

वह यह मानता था कि प्रोफेसोरे और उनके पलाज़्ज़ो को साफ-सुथरा रखना उसकी ज़िम्मेदारी है। सो वह हर सुबह अपने पैरों के नीचे पोंछा रखता और दोनों हाथों में बड़े परदार झाड़न घुमाते अपार्टमेंट के एक से दूसरे छोर तक घूमता।

वह धुले तौलियों और चादरों को छिपाने हर सप्ताह एक नई जगह तलाशता, ताकि वे प्रोफेसोरे के हाथ न लगें। इस तरह वह सुनिश्चित करता कि उसके पास हमेशा साफ़ चादरें आदि हों।

बावर्चिन जिओवाना की आँखें नीली और बाल सनहरे-भूरे थे। वह अपने बालों को गुंथी पेस्ट्री नुमा जूड़े में बांधे रखती थी। वह उतनी ही गोल-मटोल थी जितनी उसकी बनाई पानीनि (इतालवी ब्रेड़) होती थी।

वह कलाकार बावर्चिन थी। धुनें गुनगुनात और बीचबीच में उन्हें मुकरियों से सजाते वह अपना आटा गूंधती, और तब उसे पास्ता का आकर दे छत से सूखने टांगती। तब पालक से हरा और चकुंदर से लाल रंग ले प्रोफेसोरे के लिए चमकीला हरा लसानिया और माणक के रंग की फैटुचीनी बनाती थी।

बिल्ला टिबॉल्ट चौड़ा और लम्बी पूंछ वाला था। उसके शरीर पर नारंगी-भूरी धारियाँ थीं और उसके पंजे गद्देदार थे। वह दिन में एक पालतू जानवर होता और रात में जंगल का राजा बन जाता।

सीढ़ियों पर दौड़ टेराज़्ज़ो (छत) तक पहुँचता, तब वहाँ से कूद कर वह अपने संगी-साथियों के साथ रोम की छतों पर कूदता-उछलता घूमता।

जब चाँद आसमान में नीचे उतर आता वह प्रोफेसोरे के बिस्तर पर कूदता और अपने जंगली प्यारे शेर फरिश्ते-सा चेहरा लिए प्रोफेसोरे की छाती पर आ बैठता। उसकी बड़ी पूंछ अपने दोस्त के गले पर किसी रोएंदार गुलबन्द की तरह लिपट जाती।



Carlo





Giovanna जीओवाना

तो सब इस तरह बाकायदा चल रहा था और आगे भी ठीक इसी तरह चलता अगरचे प्राफेसोरे ने इतवार की एक सुबह पोर्टा पोर्टीस के कबाड़ी बाज़ार में एक हरा पौधा खरीदने जाने का फ़ैसला न किया होता।

वे अपनी धुन में मोमबत्तीदानों, जूतों, खाल से बने कोटों, और पुराने सिंहासनों से भरे कबाड़ी बाज़ार की गलियों में घूम रहे थे कि उन्होंने नेपल्स के एक सौदागर को देखा जिसके हाथ पर एक छोटा, सुरमई और भूरा उल्लू बैठा था। उसका चेहरा एक रोएंदार दिल के आकार का था।

''कितना प्यारा उल्लू,'' सौदागार ने कहा, ''उन दोल्चो गूफो।''

प्रोफेसोरे ठिठक गए। उन्होंने अब तक लकड़ी के शिशु उल्लू, कांच से बना विशाल सींगदार उल्लू, यहाँ तक कि 'हू-हू' की आवाज़ निकालने वाले उल्लू का एक मोज़ेक (पच्चीकारी) ख़रीदा था। पर आज से पहले किसीने एक असली ज़िन्दा उल्लू बेचने की पेशकश उनसे नहीं की थी। उन्हें अचानक अहसास हुआ कि उन्हें हमेशा से यही तो चाहिए था।

''माल्तो बेल्लो क्वेस्टो गूफो''' (बहुत ही सुन्दर है यह उल्लू), सौदागर ने कहा।

''सी, सी,'' प्रोफेसोरे ने हाँ में हाँ मिलाई। ''बेल्लिसीमो!'' (खूबसूरत)। उन्होंने सोचा कि उल्लू है तो सचमें खूबसूरत और न जाने क्यों उन्हें यह भी लगा, कि वे उस उल्लू को अर्से से पहचानते हैं।



वे कुछ कदम आगे बढ़े, उन्होंने उल्लू की शान्त आँखों को, गरिमापूर्ण चेहरे को, और उसके गंभीर व अन्यमनस्क चेहरे को देखा।

''मेरे प्यारे साथी,'' प्रोफेसोरे ने सम्मान से झुकते हुए उल्लू से कहा। एक हाथ से सौदागर को 5000 लीरा (इतालवी मुद्रा) का नोट थमाया, और दूसरे से उल्लू को उठा लिया। ''मेरे खास दोत्तोरे,'' (डॉक्टर) उसे उठा आगे बढ़ते हुए वे फुसफुसाए। ''ज़ाहिर है यही तुम हो! मेरे प्यारे दोत्तोरे जॉर्जो गूफो।'' वे हरे पौधे को ख़रीदने की बात भूल गए।

प्रोफेसोरे कबाड़ी बाज़ार से निकले। उन्होंने उन सभी को टोपी उठा सलाम किया, जो ''बेल्लो, बेल्लो''' (सुन्दर) कहते, ठहर कर दोत्तोरे को प्रशंसा से निहार रहे थे।





कार्लो ने नन्हे उल्लू का स्वागत एक भड़कीले टोपी टांगने के स्टैंड से किया, जिसे दोत्तोरे ने फ़ौरन अपना बसेरा बना लिया। जिओवाना ने ओह-आह करते उसके सामने कच्चे माँस की थाली परोसी।

बस टिबाल्ट की दोत्तोरे से हुई मुलाकत संयमित थी। बिल्ले ने सवालिया आँखों से उसे देखा, तब उसके गिर्द चक्कर काटे। आख़िरकार जब वह बोला तो आवाज़ खींचते और चिढ़ाते हुए कहा "म्याऊँर्रर्रर्र। जहाँ तक दोत्तोरे का सवाल था, उसने गुस्से से साँस खींची और उसे रोक अपना आकार दुगना कर लिया और देर तक उसे उलाहना देते हुए डपटा।

सप्ताह महीनों में बदले, दोत्तोरे धीरे-धीरे अपने नए घर में अच्छे से रहने लगा।



उसने प्रोफेसोरे के नाश्ते का रोल साझा करना सीखा, और शुक्रिया कहने के लिए उनके गाल पर अपना सिर रखना भी।



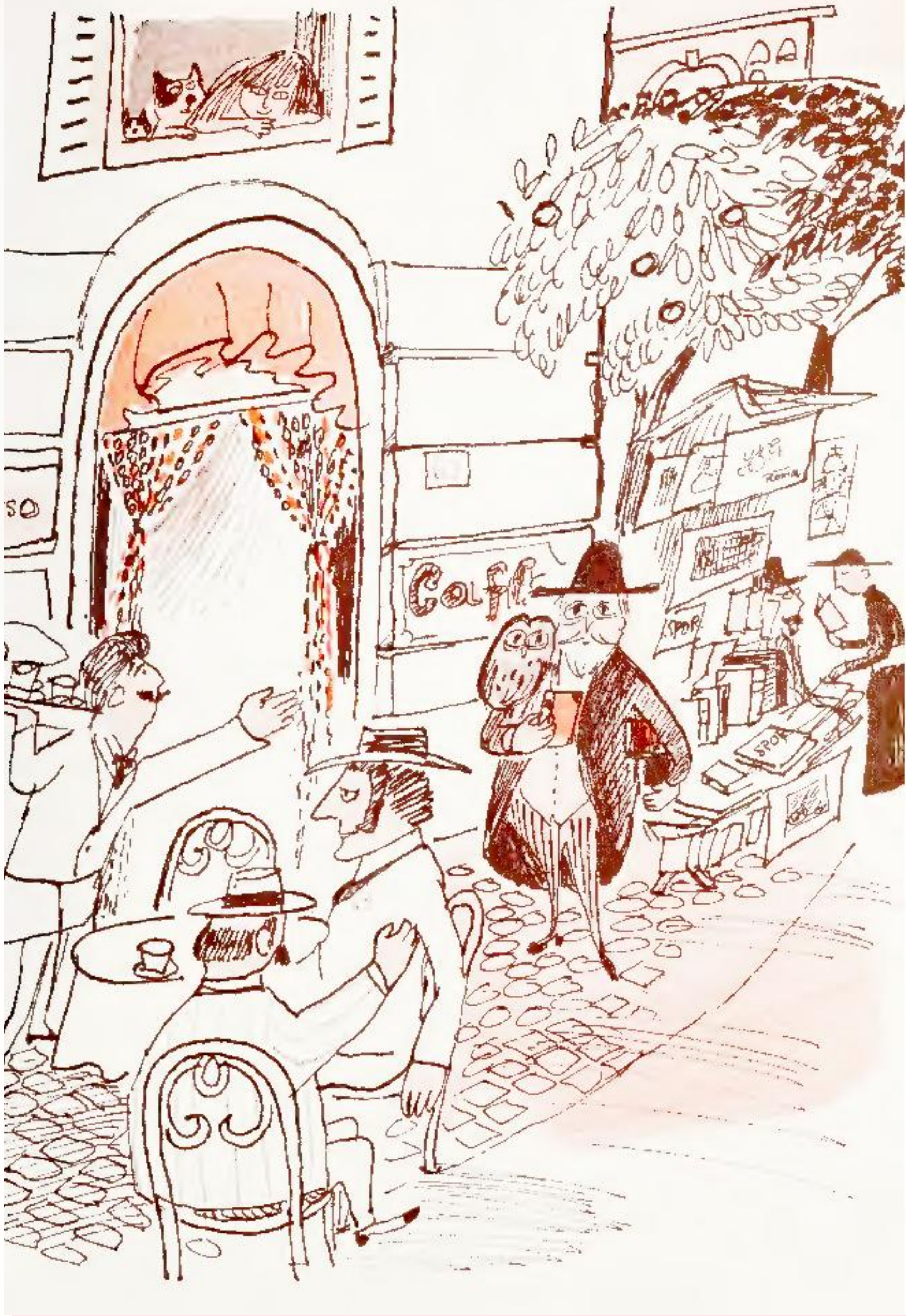




कार्लो के लिए उसने स्नेह से सिर हिलाना और जिओवाना को चमकीली मुस्कान देना और टिबॉल्ट को चिढ़ाने के लिए उसे डपटना सीखा।

जब उसे याद आता वह अपने पंख फैला उड़ता भी था, पर प्रोफेसोरे के कमरों की छत तक ही।

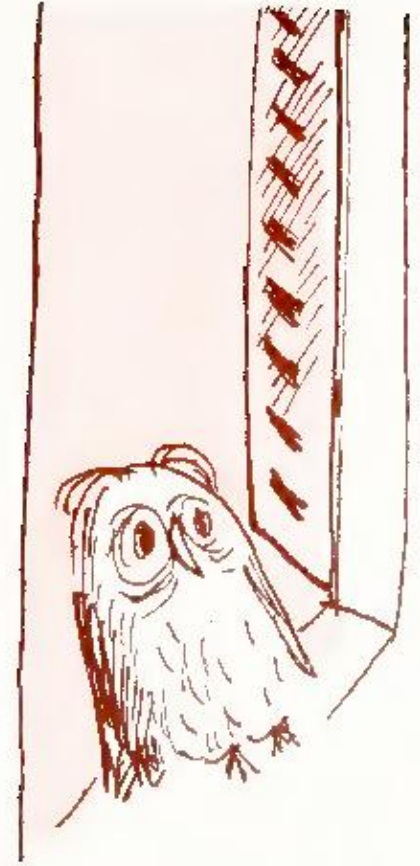
ज़िन्दगी एक शगल-सी थी। उसकी सुबहें प्रोफेसोरे के अध्ययन कक्ष में गुज़रतीं, जहां टिबॉल्ट धूप के गोले में गुड़ी-मुड़ी पड़ा होता और दोत्तोरे उनकी मेज़ पर बने एक खाने में आराम से बैठा होता। दोपहर को जब प्रोफेसोरे बाहर निकलते, टिबॉल्ट उनके बगल में चलता और दोत्तोरे उनके कंधे पर टिका होता। वे साथ-साथ मुहल्ले के कैफे में दोस्तों से मिलने जाते, क़िताबों की दुकानों में छानबीन करते और पैलेटाइन हिल के सन्तरों के पेड़ों के नीचे टहलते।





वे ऐसे साथी बन चुके थे जिन्हें लगभग कभी जुदा नहीं किया जा सकता था। हालांकि उनमें से दो एक-दूसरे को चिढ़ना और डपटना कभी बन्द नहीं करते थे। वे शाम को केवल तब अलग होते जब टिबॉल्ट रोम की छतों को लांघने निकल जाता। इधर प्रोफेसोरे और दोत्तोरे साथ बैठते, और दोत्तेरे उनके कोट से चिपका रहता। दोनों अपने-अपने ख़यालों में डूबे रहते, पर एक-दूसरे की मौजूदगी को कभी भुलाते भी नहीं थे।

इस तरह समय शान्ति से गुज़रता रहा और तब गर्मियाँ आईं। सूरज उसे प्राचीन हवेली पर ज़्यादा तेज़ी से चमकने लगा। लगने यह लगा कि सड़क की प्रचीन हवेलियाँ पीली और नारंगी कतारों में खड़ी एक-दूसरे की ओर झुकने लगी हैं।



एक सुबह जब प्रोफेसोरे के घर की खिड़कियाँ खुली थीं, दोत्तोरे, एक खिड़की की दहलीज़ पर बैठ हवाखोरी कर रहा था। वह यह भूल गया कि वह कहाँ बैठा है, और अचानक पीछे को फुदका और सीधे हवा में गिर गया।

प्रोफेसोरे खिड़की की ओर दौड़े। "दोत्तोरे!" वे चिल्लाए, "दोत्तोरे!"

किस्मत से दोत्तोरे इतना भी भुलक्कड़ नहीं नहीं हुआ था कि उसे यह याद न आता कि उल्लू आख़िरकार पक्षी होता है। सो उसने अपने पंख फड़फड़ाए और जब हवा में कुछ ऊपर उठा, उसने अपना सिर गोल-गोल घुमाया, मानो वह पूरी तरह भटक गया हो। वह हवा में पल भर रुका, अपनी बड़ी आँखें झपकाईं, जो सिर्फ पास ही देख सकती थीं, तब धीरे-धीरे उड़ चला।





"दोत्तोरे!" प्रोफेसोरे चीखे और हवेली से निकले। उनके पीछे था कार्लो जो चिड़ियों की आवाज़ें निकाल रहा था, और उसके पीछे थी जिओवाना जिसके चेहरे पर मोटे आँसू बहने लगे थे। अपने सिर पीछे को झुका, दोत्तोरे की एक झलक पाने आसमान को ताकते हुए तीनों अलग-अलग दिशाओं में भागे। उनके पीछे सहानुभूति में भीड़ इकट्ठी होती जा रही थी।

"मैडोना!" (माता मरियम) ठेले वाला हाँफती जिओवाना के पीछे तब चिल्लाया, जब वह काम्पो दी फियोरी बाज़ार से दुख भरी ख़बर ले गुज़री।

"ओ दियो!" (हे भगवान) ताज़ा लैवेंडर बेचने वाली स्त्री ने तब कहा, जब कार्लो उसके कोने में थमा।

"माम्मा मिआ!" (अरे मेरी माँ) पियाज़्ज़ा वेनेज़िया पर खड़े पुलिस वाले ने तब कहा, जब प्रोफेसोरे ने उसे बताया कि हुआ दरअसल क्या था। उसने सफेद दस्ताने वाला अपना एक हाथ उठा वाहनों को रोका। और दूसरे को बौरोनियों पर रख आसमान को घूरा।

और यों दोत्तोरो जॉर्जो गूफो की तलाश शुरू हुई। जल्द ही इसमें और लोग जुड़ गए। क्योंकि, हालांकि रोम सात बड़े पहड़ों के बीच बसा आकार और रुतबे में एक बड़ा शहर था, उसका दिल एक छोटे-से गाँव-सा धड़कता था।

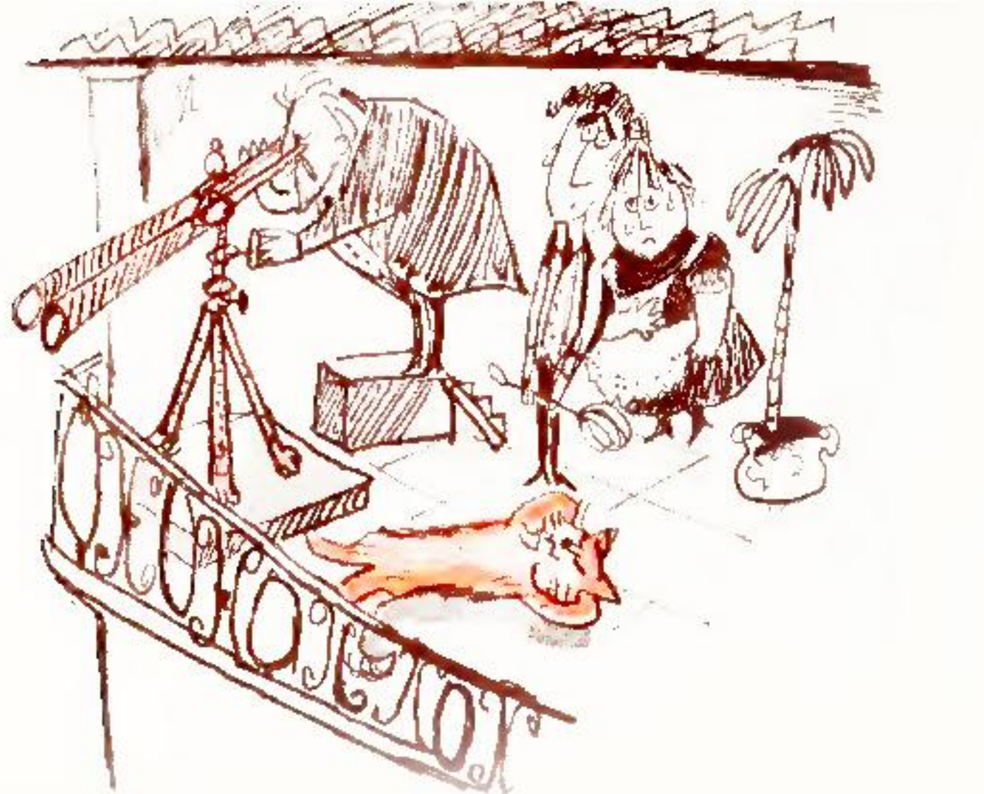
काले लबादों और सफेद टाइयों में स्कूली बच्चों की कतारें दोत्तोरो को तलाशन लगीं। ठीक यही ट्रास्टावेरे (रोम का एक इलाका) की खिड़कियों के बाहर कपड़े सुखाती दादियों-नानियों ने किया।

मठों के पादरियों ने अपनी आँखों को ढ़ांप टहलते हुए, अपने चोंगों की आस्तीनों को भूरे पंखों की तरह फैला आसमान की ओर नज़रें उठाईं; गंभीर भाव व उल्लू-से चेहरों से कॉन्वेंट (मठ) की ननों ने दीवारों के ऊपर ताका।

सेंट पीटर के ऊपर खड़ी पत्थर की मूत्तियाँ तक ऐसी लगने लगीं मानो वे भी दोत्तोरे जॉर्जो गूफो को ढूंढ़ रही हों।

पर सब बेकार रहा! दोत्तोरे कहीं ढूंढ़े न मिला।


S.P.Q.R.



कार्लो के लिए सूने टोपियाँ टांगने के स्टैंड को झाड़ना दुश्वाार लगने लगा। जिओवाना के बहते आँसुओं से रसोईघर की नमी बढ़ गई।

केवल टिबॉल्ट ही था जो शरीर तानता-सिकोड़ता हवेली में घूमता रहा। उसे डपटने-चिढ़ाने से मुक्ति जो मिली थी। उसे उल्लू की नामौजूदगी कतई नहीं खली।

प्रोफेसोरे की मूँछें दुख से हर दिन नीचे झुकती गईं। वे घंटों तक अपनी पुरानी दूरबीन लिए अपनी बाल्कनी से आसमान की छानबीन करते, मानो उससे बिनती करते खड़े रहते।

जब उनका दुख असहनीय हो गया वे उस दुखड़े को ले कैम्पिडोग्लियो (राजनीतिक केन्द्र का नाम) पहुँचे। मेयर (महापौर) साहब अपने शानदार लाल रेशम से सजे अपने कमरे में बैठे उनकी बात हमदर्दी से सुनी।



"टैरिबिलिस्समो," (भयंकर), वे बोले, और हाथीदाँत से बना अपना फोन उठा रक्षा मंत्री से बात की।



"किस्मत की बात है," रक्षा मंत्री ने कहा। उन्होंने पैदल निशानेबाज़ों की टुकड़ी बुलाई।

अब रोम की सड़कें दौड़ते-भागते सिपाहियों से भर गईं। सब लोग उन्हें देखते इन्तज़ार करने लगे। इस उम्मीद से कि उनके बड़े, परों से सजे टोप, या बिगुल के तालबद्ध स्वर, दोत्तोरे को आकर्षित कर सकेंगे।



पर जब यह कोशिश भी नाकाम रही, प्रोफेसोरे अपने सहकर्मियों से मशवरा करने विश्वविद्यालय गए।

कई वैज्ञानिक, गणितज्ञ, भौतिकशास्त्री, दार्शनिक, विशिष्ट डॉक्टर, प्रोफेसर और मास्टर एक बड़ी मेज़ पर बैठे और उन्होंने एक उल्लू को तलाशने की समस्या पर सोच-विचार किया।

अन्त में सहमति बनी कि समस्या का समाधान करने का काम कम्प्यूटरों को सौंपा जाए।

"धीरज रखो प्यारे दोस्त," उन्होंने प्रोफेसोरे से कहा। "जवाब हमें चन्द ही पलों में मिल जाएगा।"

उन्होंने प्रोफेसोरे का आश्वस्त करते हुए उनसे हाथ मिलाया, गले से लगाया और उन्हें छोड़ वे एक बड़े कमरे में गए। उस कमरे में कई मशीने चमक और दमक रही थीं, मानों बुद्धिमानी उनसे फट पड़ रही हो।

इनमें सबसे बड़ी मशीन के सामने समस्या रखी गई, सारे तथ्य साझा किए गए और समाधान चाहा गया।





कुछ ही पलों बाद वे प्रोफेसोरे के पास मशीन का समाधान ले आए कि दोत्तोरे जॉर्जो गूफो को कैसे ढूंढ़ा जाए।

''यह भला क्या है?'' प्रोफेसोरे ने उस छोटे से बक्से को घूरते पूछा, जिस पर एक लोहे की पतली गर्दन लगी थी और एक जोड़ा लकड़ी के काले पंख थे, जिन पर रंग-बिरंगे बिल्लौरी पत्थर जड़े थे। ''चे कोसे?'' (यह क्या है?) उन्होंने चौंक कर पूछा। क्योंकि उन्हें याद आया कि ठीक ऐसा ही आदिम पक्षियों को लुभाने वाला यंत्र लिए उनके दादाजी पहाड़ पर बैठा करते थे।

उनके सहकर्मियों ने अपनी एकमतता जताने के लिए कंधे उचकाए और हाथ ऊपर उठा दिए।

''म्मह!'' कहते उनके कंधे कतार में ऐसे उठे मानो अकॉर्डियन (हाथ-हारमोनियम) खुल गया हो।

''बाह!''

''एह!''

''चे सी फा?'' (अब क्या करें?) ''लगता है कुछ पुराने सवालों के जवाब भी पुराने होते हैं।''

सो विद्वत्ता से भर एक कतार में वे पक्षी-फांस को नीचे आंगन में लाए। एक बड़ी पुरानी चाभी से उसमें चाभी भरी। बक्से पर लगे पंख घूमने लगे। वे तेज़ और तेज़ घूमने लगे और दोपहर की धूप में हज़ारों लुभावनी छटाएं बिखेरीं।

गेधूलि तक यंत्र ने दो दर्जन अबाबील, कई वेनेशियन कबूतर और एक छोटे हेलिकाप्टर तक को आकर्षित किया। पर यंत्र दोत्तोरे को वापस नहीं ला सका।

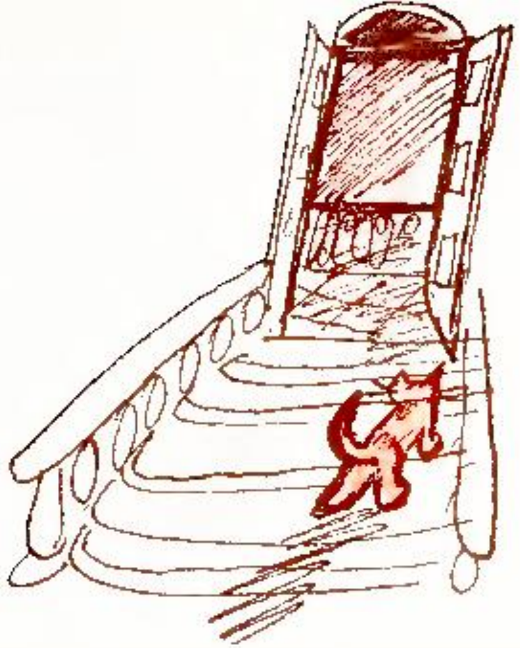




थक-हार कर प्रोफेसोरे घर लौटे। उन्हें आगे कुछ सूझ नहीं रहा था कि वे करें तो क्या? हालांकि कार्लो के स्नेह भरे दुलार, जिओवाना की सांत्वना देने वाली कैनलोनी (मीठा पकवान) और टिबॉल्ट की मौजूदगी से उन्हें तसल्ली मिली। इसके बावजूद वे कमी के अपने अहसास को छिपा नहीं सके।

टिबॉल्ट ने उनकी ठंडी उसांसों पर और दीवार पर टंगे उल्लुओं पर डाली गई दुखी नज़रों पर ग़ौर किया। वे जिस प्यार भरी नज़र से दोत्तोरे को देखा करते थे, उसके लिए बेजान नकली उल्लुओं को देखना नाकाफ़ी था।





टिबॉल्ट को प्रोफेसोरे को यों ख़यालों में डूबा देख तकलीफ़ हुई। सच तो यह था कि उसके भी अपने कुछ ख़याल थे। उसे अचरज था कि उसे खुद भी दोत्तोरे की डपट की कमी खलने लगी थी।

टिबॉल्ट ने अपना सिर प्रोफेसोरे के पैर से आख़िरी बार रगड़ा और तब कुछ करने का फ़ैसला किया। अब वह हिचकिचाया नहीं। संगमरमर की सीढ़ियाँ लांघते वह टेराज़्ज़ो को दौड़ा और तब रोम की छतों पर तब तक छलांगे लगाने लगा जब तक वह फोरो रोमानो (पुराने रोम) पर न उतर गया।

उसने यह सोच लिया था कि अगर किसी उल्लू को तलाशना हो रोम के निचले हिस्से में ढूंढ़ना बेकार होगा, क्योंकि उसे तो ऊपर होने की ज़रूरत होगी। दरअसल ज़रूरत सिर्फ़ एक बिल्ली की थी।

टिबॉल्ट उस प्राचीन चबूतरे पर आगे-पीछे घूम रहा था जहाँ किसी ज़माने में भाषण दिए जाते थे। अब उसने अपने उन परिचितों से मुख़ातिब हो जानकारी दी, जो हर रात वह पास्ता खाने इकट्ठा होते थे, जिसे दिन में उनके बूढ़े संरक्षक छोड़ जाते थे। उसने उन्हें दोत्तोरे के बारे में बताया।





यों दोत्तोरे जॉर्जो गूफो की आख़िरी खोज आयोजित हुई। रोम की हरेक छोटी गली से बिल्लियाँ टिबॉल्ट की सेना में शामिल होने आईं। काली बिल्लियाँ, सफेद बिल्लियाँ, सुरमई बिल्लियाँ, नारंगी बिल्लियाँ, आड़ी धारियों वाली बिल्लियाँ, खड़ी धारियों वाली बिल्लियाँ, कछुआ बिल्लियाँ, अभिजात बिल्लियाँ, चपटी नाक और झुर्रीदार चेहरों वाली बिल्लियाँ। बिल्लियों अनन्त ऋृखला शहर की छतों पर तब तक दौड़ी, जब तक शाम के नारंगी धुंधलके में घंटाघर की बीच वाली घंटे पर दोत्तोरे बैठा दिखाई न दे गया।

टिबाल्ट को ख़बर देने फौरन एक टोली भेजी गई। आधे घंटे के अन्दर टिबाल्ट वहाँ हाज़िर था।



छोटा उल्लू वहाँ सोचता-विचारता गंभीर भाव में बैठा था। वह अपने ख़यालों में इतना खोया हुआ था कि वह घर का रास्ता तक भूल गया था। टिबॉल्ट उसे देख मुस्कराया।

टिबॉल्ट घंटाघर के ठीक नीचे गया और अपना सिर उठा चिढ़ाते हुए ज़ोर से बोला "म्यांऊर्रर्रर्र"। दोत्तोरे ने नीचे देखा। दो जोड़ी बड़ी पीली आँखें मिलीं। टिबॉल्ट को पहचानते ही पलक झपका कर दोत्तोरे ने अपना शरीर फुलाया और उसे डपटने लगा।

टिबॉल्ट सामने वाली इमारत पर कूदा और पीछे पलट का फिर से चिल्लाया। दोत्तोरे घंटाघर से उड़ा और टिबॉल्ट को डपटने उसके पीछे उड़ा।





यों वे रोम के दूसरे छोर तक पहुँचे। एक चिढ़ाते हुए एक से दूसरी छत पर कूदता गया, जबकि दूसरा नाराज़गी से बड़बड़ाता पीछे-पीछे उड़ता चला। आख़िरकार दोनों हाँफते हुए घर पहुँचे।

प्रोफेसोरे अपनी कुर्सी से हवा में उछले। उन्हें अपनी आँखों पर भरोसा ही नहीं हो रहा था। उनकी मूंछें कांपी और मुस्कान के साथ ऊपर मुड़ गईं।

"ओह मेरे चतुर शिकारी," वे टिबॉल्ट को गले लगाते चीखे। "मेरे प्यारे सम्माननीय दोत्तोरे," वे उल्लू को सहलाते रो पड़े।

आवाज़ें सुन कार्लो और जिओवाना थालों में खाने-पीने की चीज़ें सजा दौड़े आए।

"ब्रावो!" (शाबाश) वे चीखे। "ब्राविस्सिमो!" (बहुत अच्छे)।

प्रोफेसोरे और कार्लो और जिओवाना खुशी से इतना नाचे कि उनके चेहरे लाल हो गए। उन्होंने बिल्ले को बधाई दी और उल्लू की तारीफ़ की। दोनों को थपथपाया, उनके रोओं को सहलाया।

यह सब देर रात तक चला जब तक वे सभी थक कर, एक-एक कर सो न चले गए।





सभी, सिवा टिबॉल्ट के।

वह सीढ़ियों पर दौड़ता हुआ छत पर गया और रोम की छतों की ओर कूद गया . . .

ताकि अपने दोस्तों के साथ आख़िरी जश्न मना सके। उन्होंने कोलोसियम (प्राचीन रंगशाला) के नीचे धवल चाँदनी में स्पैगैटी खाई और पुरानी शराब पी।



cappuccino - coffee beaten up with milk
pasta - dough used for spaghetti, etc.
lasagne - broad strips of pasta
fettuccine - ribbon shaped pasta
terrazzo - terrace
palazzo - palace
panini - bread rolls
bello - handsome
dolce - sweet
gufo - owl
molto - very
un - a
si - yes
questo - this
muh - muh
boh - boh
eh - eh
bravo - well done
bravissimo - extremely well done
bellissimo - extremely handsome
terribilissimo - extremely dreadful
sfortunatissimo - very unfortunate
Che cos'è - what is this?



